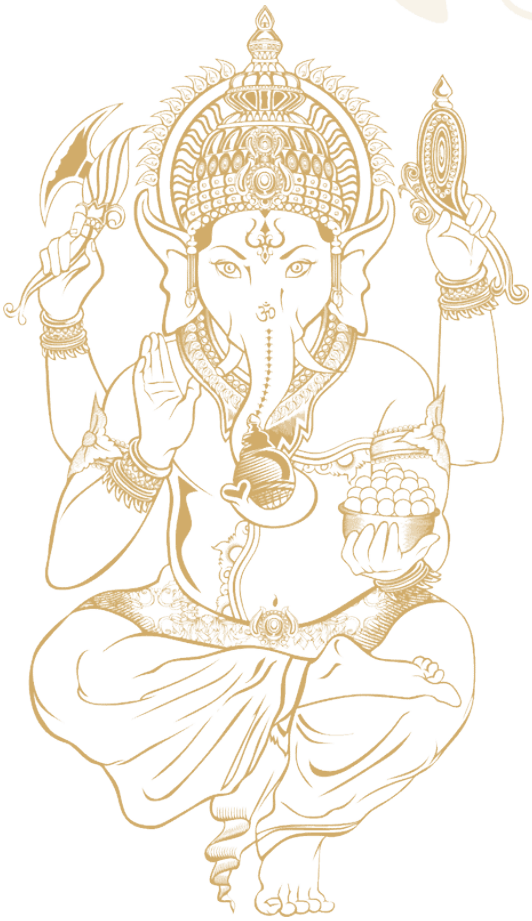

Soundharya

08 Mar 1983

02:00 AM

Mysore

Model: Web-MyKundli

Order No: 119952601

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**7-08/03/1983**
दिन	सोम-मंगलवार
जन्म समय	**02:00:00 घंटे**
इष्ट	48:28:52 घटी
स्थान	**Mysore**
राज्य	Karnataka
देश	India

अक्षांश	12:18:00 उत्तर
रेखांश	76:37:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:23:32 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	01:36:28 घंटे
वेलान्तर	-00:11:14 घंटे
साम्पातिक काल	12:36:26 घंटे
सूर्योदय	06:36:27 घंटे
सूर्यास्त	18:33:10 घंटे
दिनमान	11:56:44 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	वसन्त
सूर्य के अंश	23:04:50 कुम्भ
लग्न के अंश	09:46:11 धनु

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	धनु - गुरु
राशि-स्वामी	**धनु - गुरु**
नक्षत्र-चरण	**मूल - 3**
नक्षत्र स्वामी	केतु
योग	सिद्धि
करण	गर
गण	राक्षस
योनि	श्वान
नाड़ी	आद्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
वर्ग	मूषक
युँजा	अन्त्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	भा-भावना
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मीन

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1904	फाल्गुन	17
पंजाबी	संवत : 2039	फाल्गुन	25
बंगाली	सन् : 1389	फाल्गुन	23
तमिल	संवत : 2039	मासी	24
केरल	कोल्लम : 1158	कुंभम	24
नेपाली	संवत : 2039	फाल्गुन	24
चैत्रादि	संवत : 2039	फाल्गुन	कृष्ण 9
कार्तिकादि	संवत : 2039	फाल्गुन	कृष्ण 9

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 8
तिथि समाप्ति काल _____: 07:46:45
जन्म तिथि _____: 9
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: ज्येष्ठा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 11:08:27 घंटे
जन्म योग _____: मूल
सूर्योदय कालीन योग ____: सिद्धि
योग समाप्ति काल _____: 07:21:33 घंटे
जन्म योग _____: सिद्धि
सूर्योदय कालीन करण ____: कौलव
करण समाप्ति काल _____: 07:46:45 घंटे
जन्म करण _____: गर
भयात _____: 37:08:53
भभोग _____: 67:18:01
भोग्य दशा काल _____: केतु 3 वर्ष 1 मा 15 दि

घात चक्र

मास _____: श्रावण
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: भरणी
योग _____: वज्र
करण _____: तैतिल
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मार्जार
लग्न _____: धनु
सूर्य _____: तुला
चन्द्र _____: कन्या
मंगल _____: वृश्चिक
बुध _____: सिंह
गुरु _____: धनु
शुक्र _____: कुम्भ
शनि _____: कन्या
राहु _____: कुम्भ

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

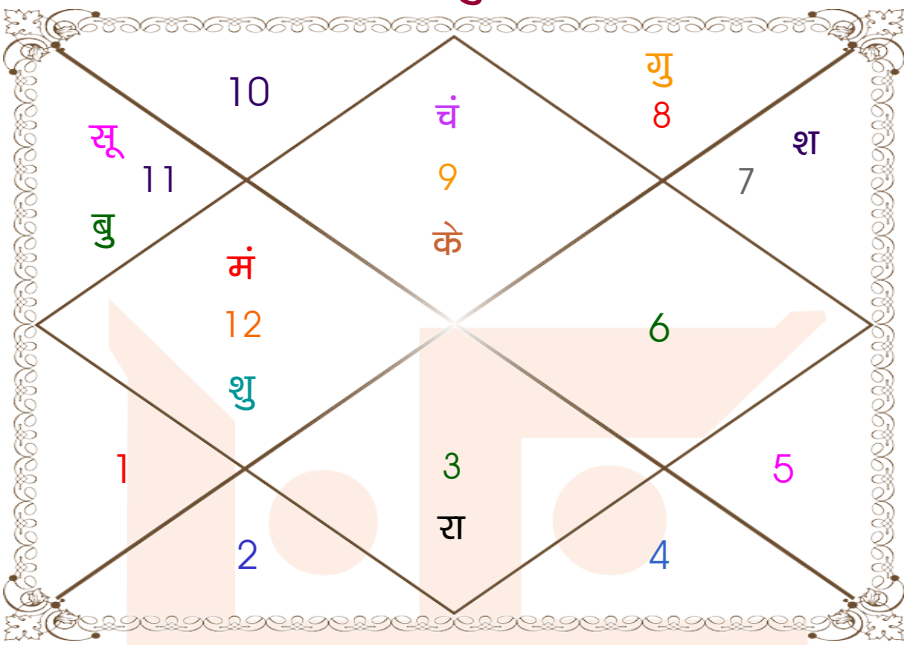

चन्द्र कुंडली

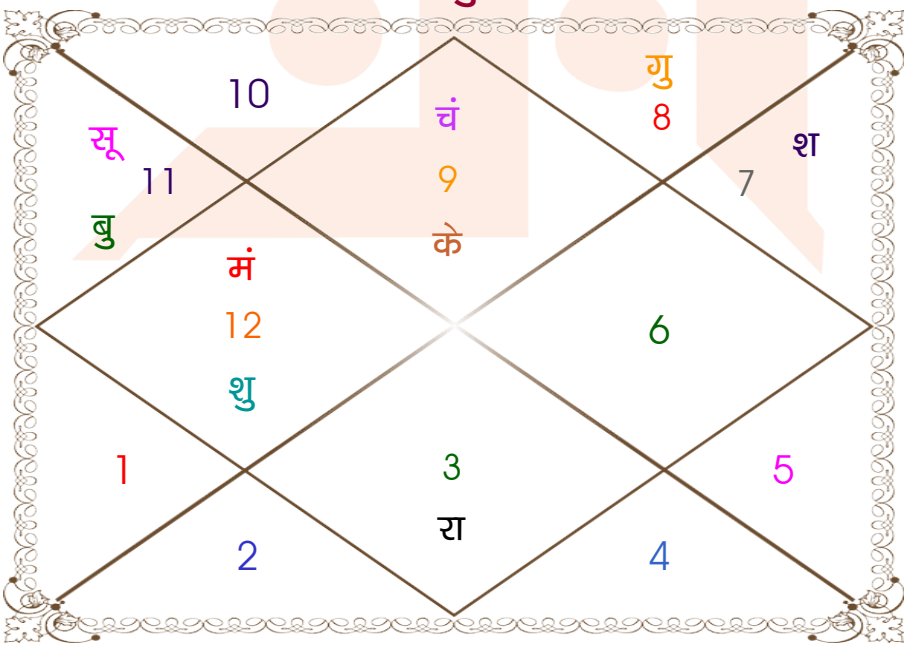

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

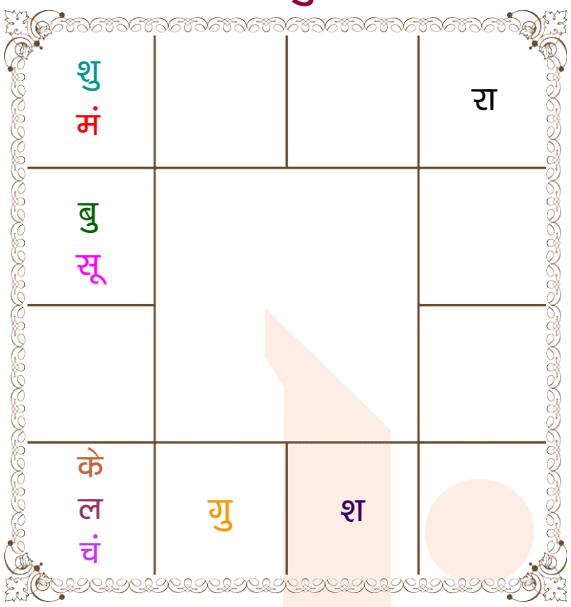

लग्न कुंडली

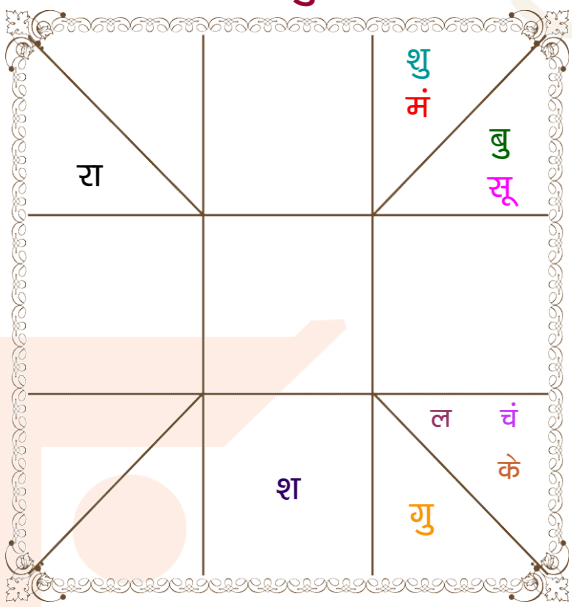

विंशोत्तरी
केतु 3वर्ष 1मा 15दि

केतु

08/03/1983

22/04/2099

केतु	22/04/1986
शुक्र	22/04/2006
सूर्य	21/04/2012
चन्द्र	22/04/2022
मंगल	22/04/2029
राहु	22/04/2047
गुरु	22/04/2063
शनि	22/04/2082
बुध	22/04/2099

योगिनी
उल्का 2वर्ष 8मा 4दि

सिद्धा

10/11/2021

10/11/2028

सिद्धा	22/03/2023
संकटा	10/10/2024
मंगला	20/12/2024
पिंगला	11/05/2025
धान्या	10/12/2025
भ्रामरी	20/09/2026
भद्रिका	11/09/2027
उल्का	10/11/2028

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			धनु	09:46:11	333:34:16	मूल	3	19	गुरु	केतु	शनि	---
सूर्य			कुंभ	23:04:50	01:00:02	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	शनि	शत्रु राशि
चंद्र			धनु	07:22:51	11:52:28	मूल	3	19	गुरु	केतु	राहु	सम राशि
मंगल			मीन	14:42:33	00:45:53	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	राहु	मित्र राशि
बुध		अ	कुंभ	07:29:16	01:39:11	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	राहु	सम राशि
गुरु			वृश्चि	16:40:46	00:03:42	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	बुध	मित्र राशि
शुक्र			मीन	22:18:10	01:13:25	रेवती	2	27	गुरु	बुध	चंद्र	उच्च राशि
शनि	व		तुला	10:21:12	00:02:20	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	गुरु	उच्च राशि
राहु			मिथु	07:32:43	00:00:01	आर्द्रा	1	6	बुध	राहु	राहु	उच्च राशि
केतु			धनु	07:32:43	00:00:01	मूल	3	19	गुरु	केतु	राहु	उच्च राशि
हर्ष			वृश्चि	15:28:21	00:00:22	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	गुरु	---
नेप			धनु	05:27:02	00:00:49	मूल	2	19	गुरु	केतु	मंगल	---
प्लूटो	व		तुला	05:34:25	00:01:07	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	चंद्र	---
दशम भाव			कन्या	16:17:30	--	हस्त	--	13	बुध	चंद्र	शनि	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:37:03

लग्न-चलित

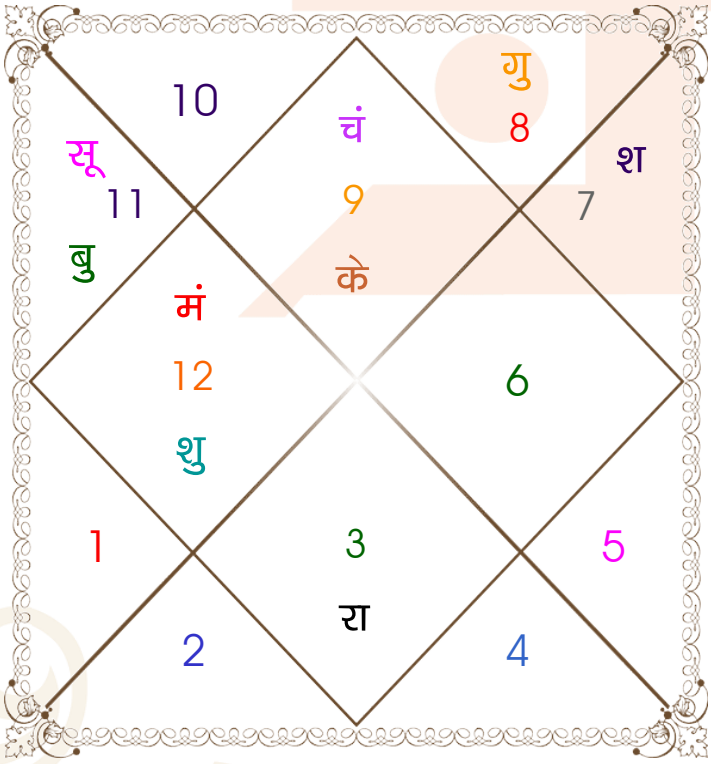

चन्द्र कुंडली

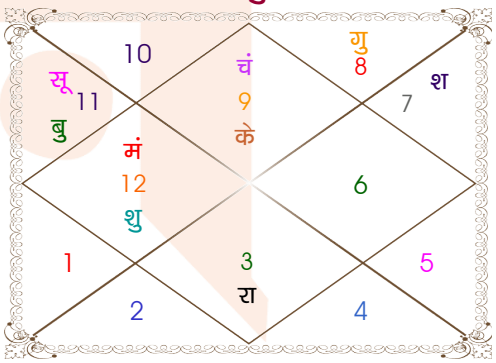

नवमांश कुंडली

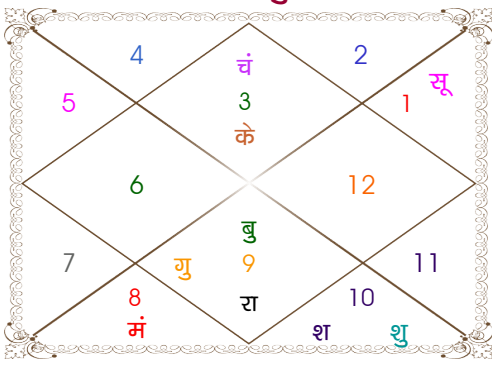

Meenna Salaria Astro &Numerio

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	वृश्चिक	25:51:24	धनु	09:46:11
2	धनु	25:51:24	मकर	11:56:37
3	मकर	28:01:51	कुम्भ	14:07:04
4	मीन	00:12:17	मीन	16:17:30
5	मेष	00:12:17	मेष	14:07:04
6	मेष	28:01:51	वृष	11:56:37
7	वृष	25:51:24	मिथुन	09:46:11
8	मिथुन	25:51:24	कर्क	11:56:37
9	कर्क	28:01:51	सिंह	14:07:04
10	कन्या	00:12:17	कन्या	16:17:30
11	तुला	00:12:17	तुला	14:07:04
12	तुला	28:01:51	वृश्चिक	11:56:37

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	धनु	09:46:11
2	मकर	10:15:03
3	कुम्भ	13:05:00
4	मीन	16:17:30
5	मेष	16:47:34
6	वृष	13:58:53
7	मिथुन	09:46:11
8	कर्क	10:15:03
9	सिंह	13:05:00
10	कन्या	16:17:30
11	तुला	16:47:34
12	वृश्चिक	13:58:53

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा

चलित कुंडली

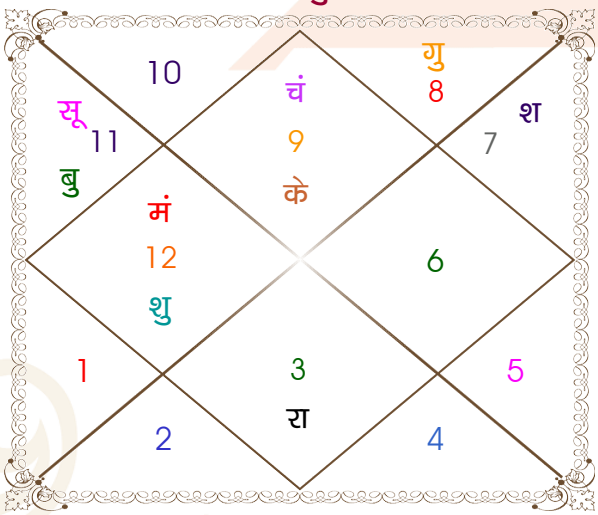

भाव कुंडली

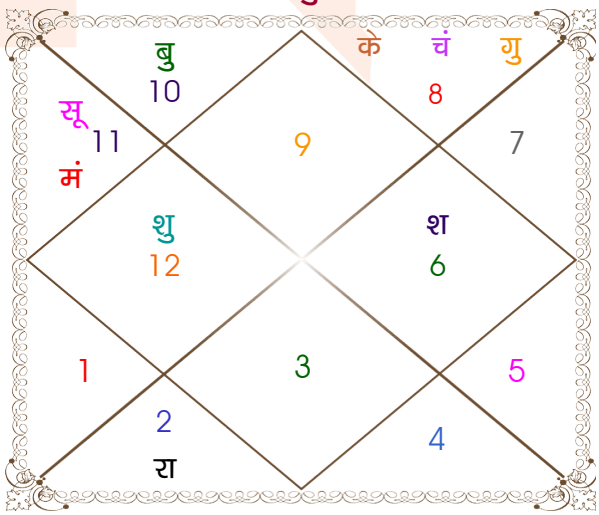

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 3 वर्ष 1 मास 15 दिन

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
08/03/1983		22/04/1986		22/04/2006		21/04/2012		22/04/2022	
22/04/1986		22/04/2006		21/04/2012		22/04/2022		22/04/2029	
	00/00/0000	शुक्र	21/08/1989	सूर्य	10/08/2006	चंद्र	20/02/2013	मंगल	18/09/2022
	00/00/0000	सूर्य	22/08/1990	चंद्र	08/02/2007	मंगल	21/09/2013	राहु	07/10/2023
	00/00/0000	चंद्र	21/04/1992	मंगल	16/06/2007	राहु	23/03/2015	गुरु	12/09/2024
	00/00/0000	मंगल	22/06/1993	राहु	10/05/2008	गुरु	22/07/2016	शनि	21/10/2025
	08/03/1983	राहु	21/06/1996	गुरु	26/02/2009	शनि	20/02/2018	बुध	19/10/2026
राहु	10/04/1983	गुरु	20/02/1999	शनि	08/02/2010	बुध	23/07/2019	केतु	17/03/2027
गुरु	16/03/1984	शनि	22/04/2002	बुध	15/12/2010	केतु	21/02/2020	शुक्र	16/05/2028
शनि	25/04/1985	बुध	20/02/2005	केतु	22/04/2011	शुक्र	21/10/2021	सूर्य	21/09/2028
बुध	22/04/1986	केतु	22/04/2006	शुक्र	21/04/2012	सूर्य	22/04/2022	चंद्र	22/04/2029

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
22/04/2029		22/04/2047		22/04/2063		22/04/2082		22/04/2099	
22/04/2047		22/04/2063		22/04/2082		22/04/2099		00/00/0000	
राहु	03/01/2032	गुरु	09/06/2049	शनि	25/04/2066	बुध	18/09/2084	केतु	18/09/2099
गुरु	29/05/2034	शनि	22/12/2051	बुध	02/01/2069	केतु	15/09/2085	शुक्र	19/11/2100
शनि	03/04/2037	बुध	29/03/2054	केतु	11/02/2070	शुक्र	16/07/2088	सूर्य	26/03/2101
बुध	22/10/2039	केतु	05/03/2055	शुक्र	13/04/2073	सूर्य	22/05/2089	चंद्र	25/10/2101
केतु	08/11/2040	शुक्र	03/11/2057	सूर्य	26/03/2074	चंद्र	22/10/2090	मंगल	24/03/2102
शुक्र	09/11/2043	सूर्य	22/08/2058	चंद्र	25/10/2075	मंगल	19/10/2091	राहु	09/03/2103
सूर्य	03/10/2044	चंद्र	22/12/2059	मंगल	03/12/2076	राहु	07/05/2094		00/00/0000
चंद्र	04/04/2046	मंगल	27/11/2060	राहु	10/10/2079	गुरु	12/08/2096		00/00/0000
मंगल	22/04/2047	राहु	22/04/2063	गुरु	22/04/2082	शनि	22/04/2099		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 3 वर्ष 1 मा 19 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
21/10/2025		19/10/2026		17/03/2027		16/05/2028		21/09/2028	
19/10/2026		17/03/2027		16/05/2028		21/09/2028		22/04/2029	
बुध	12/12/2025	केतु	27/10/2026	शुक्र	27/05/2027	सूर्य	22/05/2028	चंद्र	08/10/2028
केतु	02/01/2026	शुक्र	21/11/2026	सूर्य	17/06/2027	चंद्र	02/06/2028	मंगल	21/10/2028
शुक्र	03/03/2026	सूर्य	29/11/2026	चंद्र	23/07/2027	मंगल	09/06/2028	राहु	22/11/2028
सूर्य	21/03/2026	चंद्र	11/12/2026	मंगल	16/08/2027	राहु	29/06/2028	गुरु	20/12/2028
चंद्र	20/04/2026	मंगल	20/12/2026	राहु	19/10/2027	गुरु	16/07/2028	शनि	23/01/2029
मंगल	12/05/2026	राहु	11/01/2027	गुरु	15/12/2027	शनि	05/08/2028	बुध	22/02/2029
राहु	05/07/2026	गुरु	31/01/2027	शनि	21/02/2028	बुध	23/08/2028	केतु	07/03/2029
गुरु	22/08/2026	शनि	24/02/2027	बुध	21/04/2028	केतु	30/08/2028	शुक्र	11/04/2029
शनि	19/10/2026	बुध	17/03/2027	केतु	16/05/2028	शुक्र	21/09/2028	सूर्य	22/04/2029

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु	
22/04/2029		03/01/2032		29/05/2034		03/04/2037		22/10/2039	
03/01/2032		29/05/2034		03/04/2037		22/10/2039		08/11/2040	
राहु	17/09/2029	गुरु	29/04/2032	शनि	09/11/2034	बुध	13/08/2037	केतु	13/11/2039
गुरु	26/01/2030	शनि	15/09/2032	बुध	06/04/2035	केतु	07/10/2037	शुक्र	16/01/2040
शनि	01/07/2030	बुध	17/01/2033	केतु	06/06/2035	शुक्र	11/03/2038	सूर्य	04/02/2040
बुध	18/11/2030	केतु	09/03/2033	शुक्र	26/11/2035	सूर्य	27/04/2038	चंद्र	07/03/2040
केतु	15/01/2031	शुक्र	02/08/2033	सूर्य	17/01/2036	चंद्र	13/07/2038	मंगल	30/03/2040
शुक्र	28/06/2031	सूर्य	15/09/2033	चंद्र	13/04/2036	मंगल	06/09/2038	राहु	26/05/2040
सूर्य	16/08/2031	चंद्र	27/11/2033	मंगल	13/06/2036	राहु	23/01/2039	गुरु	16/07/2040
चंद्र	06/11/2031	मंगल	17/01/2034	राहु	16/11/2036	गुरु	27/05/2039	शनि	15/09/2040
मंगल	03/01/2032	राहु	29/05/2034	गुरु	03/04/2037	शनि	22/10/2039	बुध	08/11/2040

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु	
08/11/2040		09/11/2043		03/10/2044		04/04/2046		22/04/2047	
09/11/2043		03/10/2044		04/04/2046		22/04/2047		09/06/2049	
शुक्र	10/05/2041	सूर्य	26/11/2043	चंद्र	18/11/2044	मंगल	26/04/2046	गुरु	04/08/2047
सूर्य	04/07/2041	चंद्र	23/12/2043	मंगल	19/12/2044	राहु	23/06/2046	शनि	06/12/2047
चंद्र	03/10/2041	मंगल	11/01/2044	राहु	12/03/2045	गुरु	13/08/2046	बुध	25/03/2048
मंगल	06/12/2041	राहु	29/02/2044	गुरु	24/05/2045	शनि	12/10/2046	केतु	09/05/2048
राहु	19/05/2042	गुरु	13/04/2044	शनि	18/08/2045	बुध	06/12/2046	शुक्र	16/09/2048
गुरु	12/10/2042	शनि	04/06/2044	बुध	04/11/2045	केतु	28/12/2046	सूर्य	25/10/2048
शनि	04/04/2043	बुध	21/07/2044	केतु	06/12/2045	शुक्र	02/03/2047	चंद्र	29/12/2048
बुध	06/09/2043	केतु	09/08/2044	शुक्र	07/03/2046	सूर्य	21/03/2047	मंगल	13/02/2049
केतु	09/11/2043	शुक्र	03/10/2044	सूर्य	04/04/2046	चंद्र	22/04/2047	राहु	09/06/2049

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	8
भाग्यांक	5
मित्र अंक	1, 2, 8, 5
शत्रु अंक	3, 7, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	माणिक्य
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	83%	कम खर्च, स्वास्थ्य, सुख
माणिक्य	सूर्य	77%	पराक्रम, भाग्योदय
मूंगा	मंगल	73%	सुख, सन्तति सुख, कम खर्च
नीलम	शनि	66%	धनार्जन, धन, पराक्रम
हीरा	शुक्र	59%	सुख, शत्रु व रोग मुक्ति, धनार्जन
गोमेद	राहु	59%	दम्पति, पराक्रम
लहसुनिया	केतु	58%	स्वास्थ्य, कम खर्च
पन्ना	बुध	50%	पराक्रम, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
मोती	चंद्र	16%	रोग, दुर्घटना

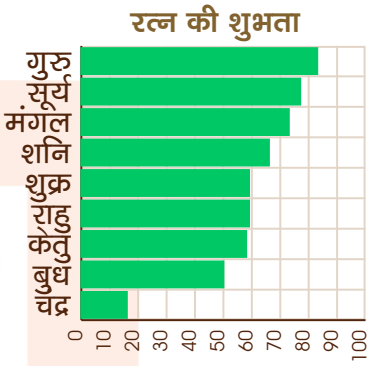

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	22/04/1986	64%	0%	80%	50%	83%	66%	53%	44%	70%
शुक्र	22/04/2006	64%	0%	73%	56%	83%	72%	72%	66%	64%
सूर्य	21/04/2012	89%	28%	80%	50%	89%	44%	53%	44%	41%
चंद्र	22/04/2022	83%	41%	73%	56%	83%	59%	66%	44%	41%
मंगल	22/04/2029	83%	28%	86%	25%	89%	59%	66%	44%	64%
राहु	22/04/2047	64%	0%	61%	50%	83%	66%	72%	72%	41%
गुरु	22/04/2063	83%	28%	80%	25%	95%	44%	66%	59%	58%
शनि	22/04/2082	64%	0%	61%	56%	83%	66%	78%	66%	41%
बुध	22/04/2099	83%	0%	73%	62%	83%	66%	66%	59%	58%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	21/12/1984-01/06/1985	17/09/1985-17/12/1987	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	17/12/1987-21/03/1990	20/06/1990-15/12/1990	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	21/03/1990-20/06/1990	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	व्यय
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	स्वास्थ्य
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	धन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	सुख
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	दुर्घटना

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चतुर्थ भाव में है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। इसके प्रभाव से जीवन में आपको भौतिक सुख संसाधनों तथा अन्य जायदाद आदि की प्राप्ति परिश्रम से होगी लेकिन शारीरिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगी। स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव उत्पन्न हो सकता है लेकिन दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। मांगलिक दोष के प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब हो सकता है तथा वैवाहिक वार्ताओं में भी व्यवधान आ सकते है लेकिन अंततोगत्वा इसमें सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपके पति का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा आपसी संबंधों में कुछेक क्षणों को छोड़कर मधुरता बनी रहेगी।

चतुर्थ भाव में मंगल की स्थिति के फलस्वरूप आपको सांसारिक सुख संसाधन परिश्रम पूर्वक प्राप्त होंगे साथ ही सप्तम भाव पर दृष्टि के प्रभाव से पति के स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा। स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा दाम्पत्य जीवन का आप सुख पूर्वक उपभोग करने में समर्थ रहेंगी। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही उच्च पद तथा सामाजिक मान सम्मान प्राप्त करेंगी। एकादश भाव पर दृष्टि के प्रभाव से आपके आय साधनों में सामान्यतया वृद्धि होगी। यदा कदा न्यूनता का भाव भी रहेगा लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं रहेगा तथा आपका सामान्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा ।

अतः मंगल के शुभ फलों में अधिक अनुकूलता के लिए आपको किसी मांगलिक युवक से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो जाए। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इसके भंग होने से आप सर्वत्र सफलता के

मार्ग पर अग्रसर होंगी तथा सांसारिक सुख संसाधन ऐश्वर्य तथा वैभव की इच्छित प्राप्ति होगी। दाम्पत्य संबंधों में भी मधुरता का भाव विद्यमान रहेगा।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि और राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में सूर्य और चन्द्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुंडली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी "ॐ नमः शिवाय" का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

तृतीय भाव में सूर्य हो तो जातक, सरकार से सम्मान प्राप्त, कवि, भाई और सम्बन्धियों के कारण दुःखी, पराक्रमी, प्रतापशाली, लब्धप्रतिष्ठ एवं बलवान् होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, क्रोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्मकाल में सूर्य तृतीय भाव में हैं अतः आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं शारीरिक अस्वस्थता अल्प मात्रा में ही रहेगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा तथा जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगे। आपके शक्ति साहस एवं पराक्रम में वृद्धि करने के लिए वे नित्य आपको प्रोत्साहित करते रहेंगे। धन सम्पत्ति का भी उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही वांछित आर्थिक सहायता भी आप उनसे प्राप्त करती रहेंगी।

आपके हृदय में भी उनके प्रति सम्मान का भाव रहेगा तथा अवसरानुकूल आप उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु कभी कभी मतभेद के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा। इसके साथ ही जीवन में पूर्ण रूप से उनकी सेवा तथा सहयोग करना आप अपना कर्तव्य समझेंगी एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगी।

चन्द्र

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आप के जन्म समय में चन्द्रमा लग्न में विद्यमान हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से उन्हें लम्बी आयु की प्राप्ति होगी। आपके जन्म के उपरान्त वे धन सम्पत्ति को भी प्राप्त करने में सफल होगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह एवं वात्सल्य रहेगा तथा जीवन के सभी शुभ एवं महत्व पूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप के परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं मतभेदों की प्रायः अल्पता ही रहेगी।

आप भी उनके प्रति मन में पूर्ण सम्मान तथा आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए प्रायः तत्पर रहेंगी। इससे आप लोगों का एक दूसरे के प्रति विश्वास आदि में वृद्धि होगी जिससे आजीवन मधुर संबंध बने रहेंगे। इससे आप परस्पर सहयोग भाव से

जीवन में प्रसन्नता की प्राप्ति करेंगी।

मंगल

चतुर्थभाव में मंगल हो तो जातक सन्ततिवान्, मातृसुखहीन, वाहनसुख, प्रवासी, अग्निभययुक्त, अल्पमृत्यु चा अपमृत्यु प्राप्त करने वाला, कृषक, बन्धुविरोधी एवं लाभ युक्त होता है।

मीन राशि में मंगल हो तो जातक गौवरवर्ण, कामुक, आज्ञाकारी गन्दा, अस्थिर जीवन, रोगी, प्रवासी, मान्त्रीक, बन्धु-द्वेषी, नास्तिक, हठी, धूर्त और वाचाल होता है।

आपकी जन्म कुण्डली में मंगल की स्थिति चौथे भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा तथा सुख दुःख में आपको हमेशा उनसे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही व्यापार एवं आजीविका संबंधी कार्यों में भी वे आपकी पूर्ण सहायता करेंगे।

आप भी उनको मन से सम्मान एवं स्नेह प्रदान करेंगी तथा सुख दुःख में सर्वदा उनके साथ रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करती रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव आएगा परन्तु कुछ समय के बाद स्थिति सामान्य हो जाएगी। साथ ही आप एक दूसरे से सहमत भी रहेंगे एवं विश्वास पूर्वक जीवन में परस्पर सहयोग का भाव रखेंगे।

बुध

तृतीयभाव में बुध हो तो जातक सद्गुणी, कार्यदक्ष, परिश्रमी, मित्रप्रेमी, भीरू, धर्मात्मा, यात्राशील, व्यवसायी, चंचल, अल्पभ्रातृवान्, विलासी, सन्ततिवान्, कवि, सम्पादक, सामुद्रिकशास्त्र का ज्ञाता एवं लेखक होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

गुरु

द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, योगाभ्यासी, परोपकारी, उदार, आलसी, सुखी, मितव्ययी, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, लोभी, यात्री एवं दुष्ट चित्तवाला होता है।

वृश्चिक राशि में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, राजमन्त्री, कार्यकुशल, सुगठित शरीर, अपनी उच्चता का दिखावा करने वाला, स्वार्थी, निर्बलस्वास्थ्य, दुःखी एवं कामुक होता है।

शुक्र

चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो जातक बलवान्, परोपकारी, सुन्दर, व्यवहार कुशल, विलासी, दीर्घायु, पुत्रवान्, भाग्यवान्, सुखी, दानी, वाहनों का स्वामी एवं आस्तिक होता है।

मीन राशि में शुक्र हो तो जातक जौहरी, शिल्पज्ञ, जमीन्दार, अच्छा और हास परिहास का स्वभाव, विद्वान, लोकप्रिय, शान्त, धनी, कार्यदक्ष, कृषिकर्म का मर्मज्ञ, शिष्ट और सभ्य सम्मानित एवं आराम तलब होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

तुला राशि में शनि हो तो जातक राजनीति में रुचि रखने वाला, प्रसिद्धनेता, धनी, सम्मानित शक्तिशाली, दानशील, परस्त्रियों में रुचि, सुभाषी, यशस्वी, स्वाभिमानी एवं उन्नतिशील होता है।

राहु

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

मिथुन राशि में राहु हो तो जातक- साहसी, दीर्घायु, साधु गाने वाला, योगाभ्यासी एवं बलवान् होता है।

केतु

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

धनु राशि में केतु हो तो जातक चंचल, धूर्त एवं मिथ्यावादी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- मंगल
(22/04/2022 - 22/04/2029)

मंगल की महादशा 22/04/2022 को आरम्भ और 22/04/2029 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल चतुर्थ भाव में स्थित हैं। दशम, एकादश तथा सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि है। इसके पूर्व आपकी 10 वर्ष की चन्द्रदशा चल रही थी। सप्तमेश चन्द्र के फलस्वरूप आपको साझेदारी में लाभ हुआ होगा, यात्रा और सुखों की प्राप्ति हुई होगी। इस दशा के दौरान आपको सुख और अधिक परिश्रम किए बगैर धन की प्राप्ति होगी, माता से लाभ मिलेगा और जीवन में प्रगति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको जीवन शक्ति, उत्साह और बल प्राप्त होगा। आपको ताप सम्बन्धी बीमारियाँ, बुखार, सरदर्द, संक्रामक रोग या हृदय गति में हल्की गड़बड़ी हो सकती है। इन मामूली पीड़ाओं को छोड़कर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ तथा व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति अति उत्तम होगी। आपको अधिक प्रयास किये बगैर लाभ मिलेगा। जमीन-जायदाद तथा माता से लाभ की सम्भावना भी है। आपकी व्यावसायिक कमाई अच्छी होगी। अपनी जीविका के लिए यान्त्रिक तथा अभियन्त्रण, सैन्य सेवा, सर्जन या दन्त चिकित्सक का कार्य या किसी औद्योगिक प्रतिष्ठान में नौकरी आदि का चयन कर सकते हैं। लोहा-इस्पात, खेल के सामान, दवा, धातु, मशीन अथवा जमीन-जायदाद से सम्बद्ध व्यापार लाभदायक सिद्ध होगा। नौकरीपेशा लोगों की पदान्नति और आय में वृद्धि होगी तथा कार्य-स्थान में वातावरण अनुकूल होगा। आपका चहुमुखी विकास होगा। नौकरी के लिये यह काल अति उत्तम होगा। आपको यश, ख्याति, शक्ति तथा अधिकार की प्राप्ति होगी। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को साझेदारी के व्यवसाय में लाभ होगा। आपकी आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। हर प्रकार के लाभ, ख्याति, प्रतिष्ठा तथा उन्नति के लिये यह दशा अति उत्तम है।

वाहन, यात्रा, सम्पत्ति :

मंगल की अन्तर्दशा में आपको वाहन का सुख मिलेगा। आपको अति सुन्दर वाहन की प्राप्ति होगी। आपको सम्पत्ति, मकान और जमीन की प्राप्ति होगी। चल-अचल सम्पत्ति के लिये यह दशा अति उत्तम है। गुरु की अन्तर्दशा में यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपनी पसन्द के अनुसार विषयों व और संस्था में परिवर्तन कर सकते हैं। आपका झुकाव गणित, वाणित्य, अभियंत्रण, भूगर्भ या सैन्य शिक्षा की ओर हो सकता है। आप अपने हर कार्य में सफल होंगे और सफलता की चोटी पर पहुँचेंगे। आप

अपने नेतृत्व-गुणों का प्रदर्शन करेंगे।

परिवार :

परिवार के सदस्यों के साथ आपके सम्बन्ध उत्तम रहेंगे। आपके बच्चे अच्छा करेंगे और आपको उनसे सुख तथा लाभ प्राप्त होगा। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि के कारण दाम्पत्य जीवन में कुछ गड़बड़ी हो सकती है। आपके जीवन साथी को यश, ख्याति, शक्ति और अधिकार की प्राप्ति होगी। आपकी माता को कुछ स्वास्थ्य समस्याएँ, लाभदायक परिवर्तन और लाभ हो सकता है। आपके पिता को साझेदारी के व्यवसाय में लाभ तथा उद्यम में सफलता मिलेगी। आपके छोटे भाई-बहनों को हर तरह लाभ, चहुमुखी समृद्धि तथा धन की प्राप्ति होगी। आपके बड़े भाई-बहनों को शत्रुओं पर विजय, उत्तम स्वास्थ्य और ननिहाल से लाभ मिलेगा। उनके साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपके मित्र आपकी बहुत मदद करेंगे। इस दशा में आपको बगैर अधिक प्रयास के सफलता मिलेगी।

अन्तर्दशा :

मंगल की दशा में उसकी अन्तर्दशा के कारण आपको सफलता, यश, श्याति तथा हर प्रकार के लाभ की प्राप्ति होगी। राहु के कारण कुछ समस्याएं हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी यात्रा हो सकती है जबकि लग्नेश शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति, शक्ति और अधिकार की प्राप्ति होगी। बुध के कारण स्वास्थ्य सम्बन्धी कुछ मामूली समस्याएँ आएंगी और समृद्धि की प्राप्ति होगी। केतु आपके लिये कुछ मानसिक समस्याएँ उत्पन्न करेगा। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप जीवन में उन्नति और बच्चों से सुख मिलेगा सूर्य की अन्तर दशा के कारण परिवर्तन होगा हौर आध्यात्मिक ग्रन्थों के अध्ययन में रुचि होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप साझेदारों से लाभ प्राप्त होगा तथा विवाह और यात्रा होगी।

अंर्तदशा :- मंगल - शनि
(12/09/2024 - 21/10/2025)

आपके लिए मंगल की महादशा 22/04/2022 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 12/09/2024 को प्रारंभ होकर 21/10/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आपको हर प्रकार से लाभ होगा। आय में वृद्धि होगी। धन, ज्ञान और सम्मान का संकेत है। साख उत्तम रहेगी। आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। संतान से सुख मिलेगा। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। कार्यों में सफलता मिलेगी। कमर्ठता, धैर्य और कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। कुछ धन आसानी से मिल जाएगा।

आपके जीवनसाथी को पहले किये निवेश से आय होगी। आपके पिता की लघु यात्राएं होंगी; उत्साह उच्चस्तर का रहेगा। माता के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकते हैं ; आय अच्छी होगी। आपके भाई-बहनों की यात्रा हो सकती है; उच्च शिक्षा, भौतिक सुख, आत्मविश्वास में वृद्धि और कार्यो में सफलता का संकेत है।

आपकी संतान सामूहिक गतिविधियों में भाग लेगी, उन्हें विरोधियों पर सफलता मिलेगी, प्रसन्न और उत्साही होंगे। अगर से सेवारत हैं तो कार्यों में सफल होंगे, चुनाव में जीत सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाता धन कमाएंगे जबकि व्यापारी सौभाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पैरों और घुटनों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए पांचमुखी हनुमान कवच का पाठ करें।

अंर्तदशा :- मंगल - बुध
(21/10/2025 - 19/10/2026)

आपके लिए मंगल की महादशा 22/04/2022 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 21/10/2025 को प्रारंभ होकर 19/10/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में आप बहुत से काम पूरे करेंगे। आपकी सोचने-समझने की शक्ति उत्तम रहेगी और आप लेखन, पठन, शिक्षण और विचार विनिमय आदि में व्यस्त रह सकते हैं। आपको महत्वपूर्ण निर्णय लेने होंगे। उद्योग-व्यापार आदि से धन कमा सकते हैं। अचानक यात्रा हो सकती है, उच्च शिक्षा के अवसर मिल सकते हैं। प्रकाशन और व्यवसाय से लाभ के लिए शुभ समय है।

आपके जीवनसाथी के लिए समय सौभाग्यशाली रहेगा; उन्हें व्यापारिक यात्राओं से लाभ होगा। आपके पिता को साझेदारी से लाभ होगा, व्यापार में कमाई होगी। आपकी माता दान आदि सत्कर्मों पर धन खर्च कर सकती हैं। आपके भाई-बहनों का विवाह हो सकता है, उनके लिए यात्रा का योग है और संचार माध्यम से जुड़ सकते हैं।

आपकी संतान के बहुत से मित्र होंगे, सम्मान मिलेगा और परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर से सेवारत हैं तो कार्यों में सफलता मिलेगी, विभिन्न माध्यमों से धनागम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय के कार्य आदि में सफलता मिलेगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, शत्रुओं पर विजय होगी। परामर्शदाताओं को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। व्यापारी धन कमाएंगे, यात्रा करेंगे।

गले और स्नायुतंत्र के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए गाय को चारा आदि खिलाएं।

अंतर्दशा :- मंगल - केतु
(19/10/2026 - 17/03/2027)

आपके लिए मंगल की महादशा 22/04/2022 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 19/10/2026 को प्रारंभ होकर 17/03/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

इस अवधि में आप उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं। मानसिक शांति, प्रसिद्धि और धनलाभ का योग है। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। घरेलू सुख मिलेगा, संतान से खुशी मिलेगी। आप स्वभाव से मददगार हैं। किसी फैसले को करने से पहले गहन विश्लेषण करते हैं। आप साहस का परिचय देंगे। लाभकारी यात्राएं हो सकती हैं। व्यापार में लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपकी माता की तीर्थयात्रा हो सकती है; उन्हें कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके भाई-बहनों के सम्मान में वृद्धि होगी। उन्हें सफलता और समृद्धि मिलेंगी, बाधाओं को पार करेंगे।

आपकी संतान के पिता के साथ मधुर संबंध रहेंगे। अगर वे सेवारत हैं तो यात्रा हो सकती है; भाग्यशाली रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकते हैं; अप्रत्याशित धन मिल सकता है। परामर्शदाता स्पर्धियों पर विजयी होंगे; सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। व्यापारी धन कमाएंगे।

उदर रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए शनिवार और मंगलवार को उपवास करें।

अंर्तदशा :- मंगल - शुक्र
(17/03/2027 - 16/05/2028)

आपके लिए मंगल की महादशा 22/04/2022 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अन्तर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 17/03/2027 को प्रारंभ होकर 16/05/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसन्न और उत्साह से परिपूर्ण रहेंगे। अचल संपत्ति, आभूषण और वाहन प्राप्त होंगे। परिवारजनों और मित्रों से संबंध मधुर रहेंगे। किस्मत साथ देगी। समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। घरेलू सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। प्रसन्नतादायक यात्राएं होंगी। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी, धन का लाभ होगा, मित्र सहायता करेंगे। जीवन सुख से कटेगा।

आपके जीवनसाथी कार्यक्षेत्र में प्रगति करेंगे। पिता को साझेदार या जीवनसाथी के माध्यम से धन का लाभ होगा। वे प्रसन्न रहेंगे और अध्यात्म में रुचि लेंगे। माता सौभाग्यशाली होंगी, घरेलू जीवन सुखी रहेगा और समाज में उच्च स्थान होगा। आपके भाई-बहनों को विभिन्न माध्यमों से धन प्राप्त होगा, पारिवारिक जीवन अच्छा होगा, प्रतिद्वंद्वियों पर विजयी होंगे, स्वास्थ्य उत्तम होगा।

आपकी संतान को लक्ष्यप्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो धन कमाएंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए कन्याओं को खीर खिलाएं।

अंर्तदशा :- मंगल - सूर्य
(16/05/2028 - 21/09/2028)

आपकी मंगल की महादशा 22/04/2022 को प्रारंभ हो रही है । मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 16/05/2028 को प्रारंभ होकर 21/09/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आपकी आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। साहित्य और दूरदर्शन आदि से लाभ हो सकता है। उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। अगर आप बेरोज़गार हैं तो काम मिल सकता है या कोई व्यापार प्रांरभ कर सकते हैं। भाग्य मध्यम रहेगा। धार्मिक या शैक्षणिक कार्यों के लिए यात्राएं हो सकती हैं। संतो की सेवा करेंगे। सब सुख-सुविधाओं से युक्त रहेंगे।

आपके भाई-बहनों का भाग्य उत्तम रहेगा। आपके जीवनसाथी को धन का लाभ होगा, किस्मत साथ देगी। पिता को साझेदारों से लाभ होगा। आपकी माता का शुभकार्यों पर धन खर्च हो सकता है। उन्हें संतान से सुख मिलेगा। आपकी संतान की शिक्षा-दीक्षा उत्तम

महादशा :- राहु
(22/04/2029 - 22/04/2047)

राहु की महादशा 22/04/2029 को आरम्भ और 22/04/2047 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु सप्तम भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि लग्न पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको

सम्पत्ति तथा वाहन की प्राप्ति, साझेदारों से लाभ और स्वास्थ्य संबंधी मामूली समस्या हुई होगी। राहु की इस दशा में आपको यात्रा तथा वाणिज्य-व्यवसाय में लाभ तथा विदेश में सफलता मिलेगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको पित्तरोग, उदररोग, ज्वर, सरदर्द, फोड़ा-फुन्सी, व्रण (फोड़ा), अल्सर आदि रोग हो सकते हैं। सन्तुलित भोजन तथा अन्य उपायों से इनमें से बहुतों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ होगी। आपको वाणिज्य-व्यापार, यात्रा तथा विदेश से लाभ होगा। किसी भी अनुबंध या समझौते के प्रति सावधानी बरतनी चाहिए। आपको सट्टे तथा निवेश में पर्याप्त लाभ होगा। जीविका तथा व्यवसाय के लिए दवा, कम्प्यूटर, रसायन, वैमानिकी, उड्डयन तथा मशीन से संबंधित क्षेत्रों का चयन कर सकते हैं। दवा, एण्टीबायोटिक, यंत्र-उपकरण, मंशीनरी आदि का व्यापार-लाभदायक हो सकता है। सेवारत लोगों को पर्याप्त लाभ मिलेगा और पदोन्नति तथा स्थानान्तरण होगा। आपको अपने सहायकों व सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा। व्यवसाय से जुड़े लोगों की जीवन-चर्या में प्रगति होगी, विदेशी स्रोतों से लाभ, यश और ख्याति की प्राप्ति तथा व्यापार में विस्तार होगा। जीवन चर्या में प्रगति के लिए यह दशा अत्यन्त सुन्दर है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शनि की अन्तर्दशा के दौरान आपको जीवन का सारा सुख प्राप्त होगा। आपको जमीन जायदाद से लाभ तथा स्थायी सम्पत्ति में वृद्धि होगी। इस दशा के दौरान आपको भू-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी छोटी यात्रा और बुध की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आपको कठिन परिश्रम करना होगा। आप प्रेरित और दृढ़निश्चय होंगे और बड़ी संख्या में शिक्षा से अलग गतिविधियों में भाग लेंगे। दवा, कम्प्यूटर-विज्ञान, गणित, विज्ञान, इन्जीनियरिंग आदि विषयों में आपकी रुचि होगी। आप में नेतृत्व-गुण विद्यमान हैं जो इस दशा के दौरान सामने आएंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चों की छोटी यात्रा, उत्तम स्वास्थ्य और जीवन-चर्चा में उन्नति होगी। आपके जीवन साथी को सम्पत्ति, कुछ मामूली सवास्थ्य-समस्या और वाणिज्य-व्यापार में सफलता मिलेगी। आपकी माता की अचल सम्पत्ति का संग्रह और सुख की प्राप्ति होगी। जबकि पिता को समृद्धि, सम्पत्ति तथा अर्थ प्राप्ति के अनेक अवसर मिलेंगे। आपके छोटे भाई-बहनों को सट्टे में लाभ, आय में अचानक वृद्धि और शिक्षा में समस्या होगी जबकि बड़े भाई-बहनों को ख्याति, यश, पद और आराम मिलेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा, जीवनचर्या में उन्नति और विवाह होगा। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान यात्रा, मामूली स्वास्थ्य समस्या और विरोधियों पर विजय मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा में उत्तम शिक्षा, बच्चों से सुख, सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। बुध की अन्तर्दशा के दौरान खुशहाली, लम्बी यात्रा और पिता से लाभ मिलेगा। केतु कुछ समस्या उत्पन्न करेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में चौतरफा समृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य, सम्पत्ति तथा सफलता मिलेगी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा में हर प्रकार का लाभ मिलेगा। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान प्रगति और जीवन में सफलता मिलेगी जबकि मंगल की अन्तर्दशा में यात्रा, व्यवसाय में प्रगति और व्यापार में लाभ होगा।

अंर्तदशा :- राहु - राहु
(22/04/2029 - 03/01/2032)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 22/04/2029 को प्रारंभ होकर 22/04/2047 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 22/04/2029 को प्रारंभ होकर 03/01/2032 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। सप्तम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी रुचि ऐशो-आराम और अय्याशी में हो सकती है। निम्न कोटि के या विदेश के विपरीत लिंग के व्यक्तियों से संबंध हो सकते हैं। विवाहित जीवन में तनाव हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में अपने इष्टदेव की उपासना के बाद बायें हाथ की मध्यमा अंगुली में गंगाजल और कच्चे दूध से धोकर धारण करें।